188 (P)
H (15)
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 188
1529/1972
(F) 1211

891.431
A211

10 DEC 1930
DEPARTMENT

॥ वन्देमातरम् ॥

आजाद हिन्द

उर्फ

मुबारक बादी

सम्पादक :—

पं० रामगोपाल शुक्ला "प्रकाश"

प्रकाशक :—

मुन्शीसिंह "रत्न" दलेल नगर निवासी

प्रांत हरदोई

प्रथमबार } १९३० { मूल्य)॥

बिना मोहर की पुस्तक चोरी की समझी जायगी।

{Azad Hind urf Mubarak Badi}

चौमासा

आजाद हिन्द

उर्फ

❀ मुबारक बादी ❀

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 188
Date 3.12.74
GOVT. OF INDIA

एजीहोयगा अबतोभारत स्वतंत्र वोआयाजमाना ।

शैर

जेलों में इसी के लिये लीडर चले गये ।
करने स्वतंत्र देश बहादुर चले गये ॥

आज़ाद बनाने के लिये मुल्क हिन्द को ।
समराष्ट्र देश भक्त जवाहर चले गये ॥

❀ आषाढ़ ❀

आषाढ़ में शंका नहीं दिलमें खाव, चलो रण में आगे कदम ही बढ़ाव, न झिझको जवानो, कहा मान जाव अगरचे चलो तो विजय सत्य पाव, पहर रण का बाना ॥ एजी होयगा०

❀ शैर ❀

मणीलाल, रामदास, देसाई व जमनालाल ।
गोबिन्द बाल कृष्ण अभैङ्कर चले गये ॥
किचलू व सत्यपाल जफ़र डाक्टर आलम ।
विद्यार्थी गोपाल दिलावर चले गये ॥

❋ सावन ❋

सावन तहेलका दो ऐसा मचाय, कि यूरुप वाले उठे घबड़ाय, और लार्ड इर्विन भी दिल में कपाय, हक जो हमारा लिया उनसे जाय, न दिल दहलाना ॥ एजी होयगा० ॥

❋ शैर ❋

श्री कृष्ण सेन गुप्त महादेव देश बंधु ।
रघुबरदयाल कालेकर रहवर चले गये ॥
श्री चन्दूलाल डाक्टर तैय्यब पटेल जी ।
कर्तव्य अपना धर्म समझ कर चले गये ॥

❋ भादों ❋

भादोंमें इतनाकिया गरकाज, जल्दीसेजल्दी

मिलैगा स्वराज्य और बन्द करदो, ये देना
खिराज, यकीनन महत्माजी पहनेंगे ताज,
न कायर कहाना ॥ एजी होयगा०

❀ शैर ❀

मोहन तपस्वी जेल में करते हैं तपस्या ।
हर भाऊ पथिक शास्त्री शंकर चले गये ॥
श्री सत्य मूर्ति और अरोड़ा श्री "प्रकाश" ।
भारत के प्यारे जेल में नाहर चले गये ॥

❀ क्वार ❀

क्वारमें हो जावो जब आज़ाद, बिनय है यही
होवे हासिल मुराद, कभी दुख न पावे न हो
बरबाद, फूले फले हिंद हो आबाद, मुबारिक
तराना ॥ एजी होयगा०

❀ गजल ❀

सताते हैं तुम्हें जो शौक से उनको सताने दो।
मिटा अरमान ले जालिम सितम भर पेटढाने दो॥
जमाना था कभी वे फिक्र सुखकी नींद सोते थे।
न सुखका मूल्यहै आलस असल कीमत लगानेदे॥
बुजुर्गों की कमाई पर पड़े नाहक अकड़ते हो।
परिश्रम मूल्य है सुखका सबक सीधा सिखानेदो।
हमारी जातसे पाकीजगी माने मिटाया है।
लहू नापाक से दिलकी जलन उसकी बुझाने दो॥
जमाने में गुलामी का मज़ा हमने न पाया था।
गुलामी और आजादी तराजू पर चढ़ाने दो॥
हमें है खौफ आजादी न फिर आकर निकलजाये।
ये मुर्दा कौम है अपनी उसे ताकत बढ़ाने दो॥
दिले आजाद पर बलकी हुकूमत जमनहीं सक्ती।
"रत्न" ये कौम की हस्ती मसीनो से मिटानेदो॥

सम्पादकों के करिश्मे ।

महानुभावों ।

आज कल ऐसे २ विद्वान बरसाती मेंढक की तरह पैदा हो गये हैं । जिसका कुछ कहना ही नहीं जिस कबि की चीज़ देखी अच्छी है, झट पट उस पुस्तक के सम्पादक होकर छपवा लिया जरा उन सम्पादकों व प्रकाशकों से पूछा जाय कि तुम लोगों को चोरी करने में क्या मजा मिलता है । अगर सम्पादक बनने का शौक ही है तो क्यों न कुछ रुपिया खर्च कर किसी कबि से कोई पुस्तक लिखवा के छपवाले । अभी हाल का समाचार है मेरी आजाद हिन्द नामक पुस्तक चौमासे की पं० जागेश्वर प्रसाद "निशंक" ने छपाली "निशंक" जी बतलाइये क्या सम्पादकी इसी का नाम है आप सम्पादकों का नाम बदनाम करते हैं । आप को ये नोटिस द्वारा सूचित किया जाता है आइन्दा ऐसी हरकत न हो ।

नोट :—ब्योपारियों को ८०) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा ।

सम्पादक—

पं० रामगोपाल शुक्ल

"प्रकाश"

विष्णु प्रयाग प्रेस, कानपुर ।

"रत्न" ग्रन्थ माला की अपूर्व पुस्तकें

नारी उपदेश भंडार	-)॥
उपदेश रत्न माला	-)॥
ईश्वर भजन माला	-)॥
कलयुग समाचार	)॥
द्रोपदी शतक	-)॥
आनंद रत्न माला	-)॥
राष्ट्रीय बीना की झनकार	-)॥
क्रांति की गूंज	-)॥
जखमी लखनऊ	-)॥
पेशावर का हत्या कांड	-)॥
चौमासा पं० जवाहरलाल का देश को संदेश	)॥
चौमासा आजाद हिन्द उर्फ मुबारक बादी	)॥
स्वदेशी बारामासा	)॥
गांधी जी का बारामासा	)॥

पुस्तकें मिलने का पता:—

मुन्शीसिंह रामसिंह, हाता नम्बर ४

मेकरावटगञ्ज, कानपुर।

दूसरा पता—"प्रकाश" कार्यालय

गिलिस बाजार, कानपुर।